|  | Published Weekly by the Maritime Baptist Publishing Company. |  |  |  | Hriols |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| C. VI., INo. 2 a | O |  | INESDAT, MAY | 28, 1880. |  |
|  |  | 1 they "ere velewidy. Thatid hadid |  |  | thank got that they merer not |
|  |  |  |  | steamship, The City of Tokio, stopped, |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | note is all we have yet heard of our brother's illnesis : $\qquad$ |  |  |  |  |
| and f |  | mad mekn |  |  |  |
| divirg them mex |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
| to do for the strangers in their eongre- |  |  |  |  |  |
| ary ones from taliog |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | is upon us as the following note indicates |  |  |  |  |
|  | Thi Roton arrepondent of Th |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | $\begin{aligned} & \text { nesth sll these questions there is a ra- } \\ & \text { ther fundsmental one which constantly } \\ & \text { crops up-sre Cansdians capable of gov- } \\ & \text { erning themselves ? if not, let us ask } \end{aligned}$ |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | we are not prepared to admit at this time of day that we cannot take care of ourselves and work out our destiny as a |  |  |  |  |
|  |  | ${ }^{\text {a }}$ |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | lmifitirn it iow mut ina courty |  |  |  |  |
|  | We have great pleasure in endorsing these wise words. They are timely as well as truthful. We hope they may |  |  |  |  |
|  | help. counteract the bad influences ofthe pedagogical utterances by disap- |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | pointed politicians, who are ever pro- phesying ruin and decay for our good |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | would, be well for our country if the <br> press of our day would take a lesson |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | when the moral character of public men |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | politieal difficulties that are now per-plexing our people, and hindering our |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | prosperity. - Fhacluars.-It is hard to believe |  |  |  |  |
|  | that the brutal rites described below can |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | in |  |  |  |  |
|  | these poor deluded Catholics dwelt, to aoross at some distance away. The nar |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  | rator prooeeds to demoribe the doings of |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |

